SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.63

अवधी–साहित्य में राम का स्वरूप विस्तार

डा0 प्रद्युम्न सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हण्डिया पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज हण्डिया प्रयागराज (उ0प्र0)221503
Email: pradumncic@gmail.com

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी साहित्य की अमूल्य धरोहर 'अवधी साहित्य' के आलोक में भगवान श्रीराम के बहुआयामी एवं लोक–मंगलकारी स्वरूप का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। भारतीय संस्कृति, इतिहास और दर्शन में 'अवध' और 'अवधी' भाषा का स्थान सर्वोपरि रहा है, जिसने भक्ति काल की विचार–चेतना को एक नई दिशा प्रदान की। इस शोध में गोस्वामी तुलसीदास विरचित 'रामचरितमानस' एवं अन्य कृतियों के आधार पर राम के ब्रह्म (निर्गुण व सगुण एकात्मता), शील, शक्ति और सौंदर्य से युक्त स्वरूप को रेखांकित किया गया है। इसके अतिरिक्त, शोध पत्र में रामराज्य की आदर्श सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक व्यवस्था की प्रासंगिकता को स्पष्ट किया गया है, जहाँ विषमता, दरिद्रता और दैहिक–दैविक–भौतिक तापों का सर्वथा अभाव है। तुलसी के राम केवल एक दार्शनिक सत्ता नहीं हैं, बल्कि वे मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में आदर्श राजा, पुत्र, भ्राता और पति के व्यावहारिक प्रतिमान स्थापित करते हैं। साथ ही, समाज के वंचित, शोषित और निषाद–केवट जैसे लोक–चरित्रों के प्रति उनका आत्मीय व समतावादी दृष्टिकोण उन्हें एक महान लोक–नायक के रूप में प्रतिष्ठित करता है। निष्कर्षत:, यह शोध प्रदर्शित करता है कि अवधी काव्य में वर्णित राम का स्वरूप कालजयी है, जो युगीन विसंगतियों को दूर कर समरस समाज के निर्माण का शाश्वत संदेश देता है।

बीज शब्द–*हिन्दी साहित्य, अवधी साहित्य, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस, लोक–मंगल और समरसता, रामराज्य* की अवधारणा, सगुण–निर्गुण अभेद।

'अवधी' का अर्थ होता है अवध का अथवा अवध–विषयक। परन्तु साहित्य के क्षेत्र या भाषा के क्षेत्र में जब 'अवधी' शब्द का प्रयोग होता है, तब इस शब्द का अर्थ होता है 'अवध–प्रदेश के अन्तर्गत बोली जाने वाली बोली या विभाषा।' उत्तरभारतीय भू–भाग का एक अत्यन्त प्राचीन, गौरवशाली एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध प्रदेश है। इतिहास के पृष्ठों में अवध के वैभव, विगत ऐश्वर्य और राजनीतिक एवं सांस्कृतिक महत्व का सविस्तार वर्णन किया गया है। त्रेता, द्वापर, सतयुग और वर्तमान युग में भी अवध का अपना महत्व रहा है। रघुवंश के आविर्भाव के साथ ही अवध के भाग्य–नक्षत्र और अधिक चमक उठे हैं।

'अवध' शब्द का अर्थ अयोध्या है। भारतीय इतिहास और संस्कृति में अयोध्या, अयोध्या राज्य, राज्य– वंश और उसके योगदान का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यवनों के राज्य–काल में भी यह अवध शक्ति सम्पन्न राज्य था। अंग्रेजी राज्य–काल में साहित्यिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अवध का अपना महत्त्व रहा है। 'रामचरितमानस में गोस्वामी जी ने 'अवध' शब्द का प्रयोग 'अयोध्या' के लिए किया था।[1]

भक्ति काल में साहित्य की धारा चार रूपों में दृष्टिगत होती है। इनमें सर्वप्रथम सन्त–काव्य, द्वितीय प्रेम–काव्य, तृतीय राम–काव्य और चतुर्थ कृष्ण–काव्य था। इनमें से कृष्ण काव्य की रचना पूर्ण रूप से ब्रजभाषा में हुई। प्रेम–काव्य और राम–काव्य साहित्य अधिकांश अवधी में लिखा गया, कारण यह था कि इस साहित्य के अधिक कवि अवध– प्रदेश के ही निवासी थे, या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उनका सम्बन्ध किसी न किसी रूप में इस प्रदेश से अवश्य था। सन्त–साहित्य की भाषा, यों तो सधुक्कड़ी भाषा कही जाती है, परन्तु तथ्य यह है कि इस साहित्य के कुछ कवि ऐसे हैं जिन्होंने अपने काव्य की रचना अवधी के माध्यम से की थी। गोस्वामी जी ने 'रामचरित मानस' की रचना अवधी में ही प्रारम्भ की थी।

तुलसी का 'रामचरितमानस' संवादमूलक काव्य है। तुलसी के राम सगुण और निर्गुण दोनों हैं। दोनों ब्रह्म में कोई अन्तर नहीं है–

सगुनहिं अगुनहिं नहिं कुछ भेदा।

गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा।।

तुलसी के राम सगुण ईश्वर है, साकार भगवान हैं, जिन्होंने राजा दशरथ के घर अवतार धारण किया है। तुलसी के राम राजा के पुत्र हैं, जो श्रेष्ठ मानव है। शील, सौन्दर्य और शक्ति से सम्पन्न राम तुलसी के आराध्य हैं। जो मर्यादापुरुषोत्तम राम है। तुलसी ने अपने महाकाव्य में राम के विभिन्न रूप जैसे कि आदर्श मानव, आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श वीर, आदर्श पिता को चित्रित किया है। तुलसी के 'रामचरितमानस' और राम का प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' और राम पर पड़ा है। तुलसी के राम परब्रह्म, विष्णु के अवतार और मर्यादा पुरूषोत्तम हैं।

भक्तों के प्रेम का कारण निर्गुण ब्रह्म सगुण बन जाते हैं। जैसे जल और ओले में भेद नहीं, वैसे ही निर्गुण और सगुण में भेद नहीं।"[2] गोस्वामी जी को कदापि राम की निराकारता मान्य है परन्तु वे राम के सगुण रूप को ही श्रेयस्कर और वंदनीय मानते हैं–

जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभव गम्य मन पर ध्यावहीं।

ते कहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं।।[3]

भगवान् भाव–भगति के भूखे हैं इसलिए तुलसीदास जी 'विनयपत्रिका' में कहते हैं–

"तू दयालु दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी।

हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुंज हारी।।

तोहिं मोहिं नाते अनेक मानिए जो भावै।

ज्यों–त्यों तुलसी कृपालु। चरन–सरन पावै।"4

भक्ति के क्षेत्र में दैन्य को बहुत ही महत्त्व दिया गया है। गोस्वामी जी कहते हैं कि राम गरीबों पर बड़ी कृपा करते हैं उन्हें आदर देते हैं। उनकी मानवीय कृपा, सहानुभूति निषाद, रीछ, बन्दर, जटायु, शबरी आदि पर स्पष्ट दिखायी देती है।"[5]

ब्रह्म, जीव और माया को तुलसी ने 'मानव' में प्रस्तुत के साथ ही साथ कहीं अप्रस्तुत के रूप में भी लिया है– राम को ब्रह्म, लक्ष्मण को जीव और सीता को माया के रूप में देखा है। तो भी तुलसीदास की दृष्टि जितनी राम पर रही है उतनी माया पर नहीं। फिर भी उन्होंने माया के बारे में कहा बहुत कुछ है।[6] पुनः "जीव और ब्रह्म की अपेक्षा तुलसी का मायाविचार ही अधिक गूढ़ हैं, उसी के चक्कर में लोग रहते और अधिक से अधिक अपना ज्ञान दिखाते हैं।''[7]

नाम और रूप– इन दो उपाधियों की मदद से ही भक्त ईश्वर को प्राप्त करता है–नाम रूप दुई ईश उपाधी इसमें भी नाम रूप से बड़ा है–

"कहऊँ नामु बड़ राम ते निज विचार अनुसार।"[8]

तथा 'ब्रह्म राम ते नामु बड़ बर दायक बर दानि।।''[9]

नाम–स्मरण से ऊपर भी उर्वर भूमि में परिणत हो जाता है।

गोस्वामी तुलसीदास के अनुसार निर्गुण ब्रह्म मनुष्य का तपों से उद्धार नहीं कर सकता, उसकी व्यथा को नहीं सुन सकता। इसलिए तुलसीदास उस सगुण ईश्वर को ही अपना आराध्य बताते हैं जो उसके भक्त पर हमेशा ध्यान रखे। तत्त्वमीमांसीय दृष्टि से राम के स्वरूप पर विचार करने के बाद समाज के दार्शनिक पक्षों पर भी प्रकाश डालना आवश्यक है। ब्रह्म जिस कारण अवतार लेता है उसका कारण बतलाते हुए तुलसीदास जी कहते हैं–

जब जब होइ धरम की हानी।
बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।
तब तब प्रभु धरि मनुज सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

उनका सारा दर्शन ब्रह्म की गोचरता पर अवलंबित है इसलिए संसार में राम का अवतार कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

तुलसी के राम एक महान् संत हैं। उनमें सत्यता, करूणा, सहृदयता, मैत्री, उदारता आदि अनेक नैतिक गुण पूरी मात्रा में विद्यमान हैं। उनमें स्वार्थ, घृणा, क्रोध, हिंसा आदि की वृत्तियों का पूर्णतः अभाव है। उनके चरित्र में सहजता है, सीधापन है। वे मंगल के अधिष्ठान हैं। उनके लिए पराया कोई नहीं, सब उनके हैं। यह अवश्य है कि दलित, त्यागी तथा निःस्वार्थ के प्रति राम का अधिक प्रेम है। भरत और निषाद पर उनका प्रेम इसी कारण है। यह प्रेम पारिवारिक संबंधों पर ही निर्भर नहीं है, उसका आधार व्यापक, सामाजिक संबंध है। समाज में चाहे दुःखी–दीनों और निःस्वार्थ सेवकों को कोई न पूछे, राम उन्हें पूछने वाले हैं।

तुलसी के राम लोक–जीवन से इतने अधिक जुड़े हैं कि समाज के सभी वर्गों के लिए अपना द्वार खोले हुए हैं। सबके लिए बाँह फैलाए हैं। राम का स्वभाव है कि जो प्रत्येक दृष्टि से साधनहीन हैं उसके वे सहायक हैं–

एक बानि करूनानिधान की।

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

सो प्रिय जाके गति न आन की।।''[10]

तुलसी के राम लोकमंगल की दृष्टि से प्रत्येक कार्य करते हैं क्योंकि व्यक्ति का मंगल उसी में है। राम जब युद्ध के लिए प्रस्थान करते हैं तब अच्छे–अच्छे शकुन होने लगते हैं। इस पर कहा गया–

जासु सकल मंगलमय कीती।

तासु पयान सगुन यह नीती।।

जब समुद्र पार करने की बात आती है तब वहाँ भी राम पहले उससे विनय ही करते हैं। किन्तु लक्ष्मण को विनय करना पसंद नहीं आया। फिर भी तीन दिनों तक वे विनय करते रहे। लोकमंगल की दृष्टि से प्रत्येक को अवसर देना चाहिए। इसलिए राम समुद्र को अवसर देते रहे।''[11]

तुलसीदास ने आदर्श समाज के रूप में रामराज्य का वर्णन किया है। राम राज्य से सर्वोत्तम राज्य–व्यवस्था कोई अन्य नहीं हो सकती। इसलिए गांधी जी भारत में रामराज्य की स्थापना करना चाहते थे, लेकिन उनकी यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। रामराज्य मनुष्यों को जैसा सुख दे सकता है वैसा किसी भी राज्य में संभव नहीं है। इस राज्य में किसी को भी दैहिक, दैविक और भौतिक ताप नहीं होता था। किसी की अल्पायु नहीं होती थी। कोई भी दरिद्र, दुखी, अबुध और लक्षणहीन नहीं था–

दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज काहू नहिं व्यापा।।

अल्पमृत्यु नहीं कवनेउ पीरा। सब सुन्दर सब विरुज सरीरा।।

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।

सभी प्राणी एक दूसरे से प्रेम करते थे, सब स्वधर्म निरत थे और सभी श्रुति के अनुसार चलते थे–

सब नर करहिं परस्पर प्रीति।

चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।

गज– पंचानन साथ–साथ रहते थे–

चरहिं एक संग गज पंचानन।

वैर भाव का पूर्णतः अभाव था। राम के प्रताप के कारण विषमता का कहीं दर्शन नहीं होता था–

बयरू न कर काहू सन कोई।

राम प्रताप विषमता खोई।।

यहाँ ध्यातव्य है कि विषमता का नाश वर्ग संघर्ष से नहीं हुआ है अपितु राम प्रताप के नैतिक बल से हुआ है। इस राज्य में कोई किसी का शोषक, भक्षक तथा अनिष्टचिन्तक नहीं होता था। सभी एक दूसरे के पोषक, रक्षक तथा शुभचिन्तक होते थे। सभी अपने–अपने धर्म पर चलते थे। जाति, संप्रदाय से ऊपर उठकर सबके साथ अच्छा बर्ताव होता था। रामराज्य में ऐसी शिक्षा दी जाती थी कि लोग परहित ही को सर्वश्रेष्ठ धर्म मानते थे। सभी उदार और परोपकारी होते थे–

सब उदार सब पर उपकारी।

तुलसीदास जी ने राम के रूप सौन्दर्य का मनोहरी चित्रण किया है, उदाहरणार्थ–

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

'मोरपंख सिर सोहत नीके'।

गुच्छ बीच–बिच कुसुम कलीके।।

भाल तिलक, श्रमबिन्दु सुहाए।

श्रवन–सुभग भूषन छवि छाए।

बिकट भृकुटी कच घूघरवारे।

नव सरोज–लोचन रतनारे।।

चारू चिबुक नासिका कपोला।

हास–बिलास लेत मनु मोला।।[12]

तुलसी की सौन्दर्य–भावना के संदर्भ में डॉ० राम प्रसाद मिश्र का कथन है कि–" शक्ति–शील संयुक्त होने के कारण तुलसी के राम का सौन्दर्य प्रेरक और पावन भी हो जाता है। रामायण के राम का सौन्दर्य एक महोतमहीयान् योद्धा का सौन्दर्य है, नायक का सौन्दर्य है। रामचरित मानस के राम का सौन्दर्य एक पूर्ण पुरूष का सौन्दर्य है। एक समग्र सौन्दर्य–द्रष्टा के रूप में तुलसीदास की समता संसार का कोई कवि नहीं कर सकता। तुलसी की सौन्दर्य भावना अपने आप में समग्र है। उनके सौन्दर्य चित्र सत्य–शिव–सुन्दरम् की त्रिमूर्ति है। उनकी समता दुर्लभ है।''[13]

'अयोध्या कांड' में कवि ने राम की स्थित प्रज्ञता का कलात्मक चित्रण किया है। राम का प्रशांत गहन आनन राज्याभिषेक के समाचार से प्रसन्न नहीं हुआ, वनवास के समाचार से मलिन नहीं हुआ। सुख और दुःख के चरम क्षणों में एकरसता अथवा समरसता ही स्थितप्रज्ञता है। राम वनगमन–प्रसंग में राम की महत्तमता अथवा पुरूषोत्तमता प्रशांत–गहन स्वरूप प्राप्त करती है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। पितृभक्ति के इतिहास में राम का स्थान श्रवण कुमार या भीष्म के साथ साथ सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ पर वे एक सच्चे आज्ञाकारी पुत्र के रूप में सामने आते हैं। तुलसी के शब्दों में–

मन मुसुकाइ भानुकुलभानू। राम सहज आनंद निधान।।

सुनु जननी सोइ सुत बड़भागी। जो पितु–भातु बचन अनुरागी।।

तनय मातु–पितु तोषनिहारा। दुर्लभ जननि, सकल संसारा।।

तुलसीदास तन, मन और जीवन, सभी दृष्टियों से राममय है। राम का चरित और चरित्र इतना अधिक महान और विशद है कि उनसे सम्बद्ध कथानक ग्रहण कर कोई भी कवि महाकाव्य या मुक्तक काव्य की सृष्टि कर डालता है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि अवधी साहित्य में श्रीराम का स्वरूप आदर्श मानव, लोकनायक और मर्यादा के सर्वोच्च प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित है। तुलसीदास ने उन्हें धर्म, न्याय, करुणा, समता और लोककल्याण के संवाहक के रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार अवधी साहित्य में राम का चरित्र केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और आदर्श जीवन–दृष्टि का शाश्वत प्रेरणा–स्रोत बनकर उभरताहै।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'बन्दौ अवधपुरी अति यावन।
2. तुलसीदास–रामचिरितमानस, 2–93–4

3. रामचरितममानस, 2–82–1

4. रामचरितमानस, 1/23 दोहा

5. रामचरितमानस, 3:10:4

6. रामचरितमानस, 7:28 छन्द

7. रामचरितमानस, 7:43:2–3

8. तुलसीदास, रामचरितमानस, 1/13/2

9. रामचरितमानस, 1/233/2–7

10. रामचरितमानस, 2/40/5

11. रामचरितमानस, 2/7

12. रामचरितमानस, 1/13/3

13. डॉ0 राम प्रसाद मिश्र, तुलसी साहित्य के सर्वोत्तम अंश, पृ0–38

Cite the Article:

सिंह, डा0 प्रद्युम्न. (2026). अवधी-साहित्य में राम का स्वरूप विस्तार. Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, 3(4) 589- 594, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, June-2026.
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.63

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डा0 प्रद्युम्न सिंह

For publication of research paper title

अवधी–साहित्य में राम का स्वरूप विस्तार

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026, Impact Factor-RPRI-3.89/6.69

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.63